भारत माता का अमिताभ बच्चन संस्करण

रणदीप सुरजेवाला (कांग्रेस) - हम मोदी से पूछना चाहते हैं कि उन्होंने काला धन लाने का वादा किया था और ये भी वादा किया था कि जो भी कालाधन में शामिल होगा, सज़ा मिलेगी। क्या हमारी जांच एजेंसियों को ग़लत संदेश नहीं जाता है कि एक आदमी जो मनी लॉड्रिंग में आरोपी है वो मोदी सरकार के दो साल पूरे होने के प्रोग्राम की मेज़बानी कर रहा है। हो सकता है कि अमिताभ निर्दोष साबित हो जाएं लेकिन प्रधानमंत्री क्या संदेश दे रहे हैं?

शाहनवाज़ हुसैन (बीजेपी) - बिग बी सुपरस्टार हैं। भारत के लोग उन्हें प्यार करते हैं। भारत के लोग उन्हें राहुल गांधी से ज़्यादा प्यार करते हैं। कांग्रेस को अपनी जलन नहीं दिखानी चाहिए।

कांग्रेस ने अमिताभ बच्चन का नाम लिया, जवाब में बीजेपी ने अमिताभ बच्चन का नाम लिया। बच्चन साहब का भी ट्वीट आ गया कि मैं कार्यक्रम का मेज़बान नहीं हूं। बेटी बचाओ का हिस्सा हूं। पल भर में चैनलों पर अमिताभ बच्चन की शहंशाही अदा वाली तस्वीरें चलने लगीं। बच्चन साहब वैसे ही पर्दे पर आकर्षक लगते हैं। उनके प्रति लोगों का प्यार भी है। देखते देखते चैनलों के उदास स्क्रीन में जान आ गई, बच्चन साहब चलने लगे। उन्हें लेकर बहस होने लगी। पनामा पेपर्स पर जब भारत की तरफ से इंडियन एक्सप्रेस लगातार छाप रहा था तब याद कीजिए कि क्या किसी चैनल ने ऐसी गंभीर बहस की थी। अभियान चलाया था। औपचारिकता ही पूरी हुई होगी। अब उसी पनामा पेपर्स को लेकर कांग्रेस ने निशाना बनाया तो कांग्रेस बीजेपी का खेल शुरू हो गया।

बीच में तो ऐसी भी ख़बरें आईं कि पनामा पेपर्स के कारण सरकार ने बच्चन साहब को अतुल्य भारत का ब्रांड अंबेसडर नहीं बनाया। तब तो ऐसी बहस नहीं हुई। तो क्या जानबूझ कर बच्चन साहब का नाम उछाला गया ताकि फिर से नकली बहसों का आकर्षक संसार रचा जाए। आख़िर देश के हालात से जूझ कर शाम लौटे दर्शकों में से कौन बच्चन साहब को देखकर थोड़ी देर के लिए स्क्रीन पर नहीं रुकेगा। आज की शाम सरकार के किसी दावे के परीक्षण पर बहस हो सकती थी मगर अब बच्चन के बहाने सब सरकार के साथ होंगे क्योंकि बहुत से लोग बच्चन के साथ होते ही हैं तभी तो वे इतने बड़े स्टार हैं।

पनामा पेपर्स में कितने लोगों के नाम आए। कांग्रेस ने उन्हें लेकर प्रेस कांफ्रेंस की औपचारिकता ही पूरी की होगी। देश में सूखा पड़ा है। किसान मर रहे हैं। पदयात्रा कर रहे हैं योगेंद्र यादव और भोपाल के निरीह स्वयंसेवी संगठन जिनकी एक सदस्या दोपहर में फोन कर गिड़गिड़ा रही थीं कि मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड में किसानों की हालत ख़राब है। क्या आप दो मिनट भी दिखा देंगे। मैं कहता रहा कि मेरी तो रेटिंग ज़ीरो है। जिनके नंबर हैं वहां बात कीजिए तो शायद सबका ध्यान जाए और किसानों की जान बच जाए। लेकिन वहां तो बच्चन

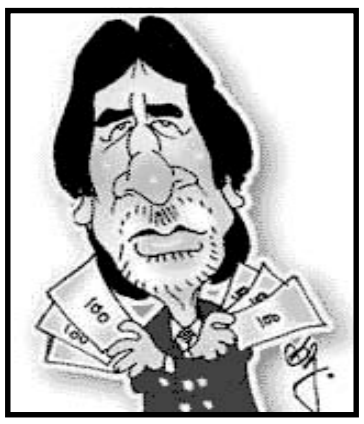

साहब की अदायगी स्क्रीन पर तैर रही है। किसान तो वे भी हैं। आख़िर हमारा मीडिया सूखे के इस हालात में सबसे बड़ा किसान खोज ही लाया। मैं कहता था कि भारत का मीडिया हमेशा जनता की बात करता है। अमिताभ बच्चन की बात करता है।

चैनल वाले हर शाम के लिए एक ऐसे मुद्दे की तलाश में रहते हैं जो बिगड़ चुके दर्शकों की शाम में कशिश पैदा कर सके। कुछ जोश हो, कुछ मज़ा आ जाए। मैं खुद इस सिस्टम का हिस्सा हूं। मैं बदल नहीं सकता तो बता तो सकता हूं कि टीवी में क्या हो रहा है। कहा तो कि टीवी कम देखिये। ये जनता का विरोधी है। टीवी वाले ही खुद को सही साबित किये जा रहे हैं। आप याद कीजिए कितने ऐसे मुद्दे आए। जिन्हें लेकर हम और आप बंटते बंटते कांग्रेस बनाम बीजेपी में बंट गए। यही हो रहा है। इन मुद्दों के ज़रिये लगातार कोशिश हो रही है कि लोग जनता न रहें। या तो कांग्रेस के समर्थक हों या बीजेपी के समर्थक हो जाएं।

अमिताभ बच्चन अब बड़े सवाल हैं। देश के सवाल। कभी अकबर तो कभी महाराणा प्रताप, कभी अशोक तो कभी टीपू, कभी भारत माता तो कभी वंदेमातरम। कभी अगुस्ता वेस्टलैंड आ जाता है तो कभी ललित गेट आ जाता है। ललित मोदी नहीं आता है तो विजय माल्या भाग जाता है। एक के बाद एक ऐसे मुद्दे आते जा रहे हैं जिनमें घनघोर बहस की गुज़ाइश होती है। हफ्ते हफ्ते के अंतराल पर ऐसे मुद्दे राष्ट्रीय मुद्दे के रूप में पेश होते जा रहे हैं। बच्चन की तस्वीर दौड़ रही है। इंदिरा गांधी के साथ की तस्वीर तो कभी राजीव गांधी के साथ की तस्वीर। बच्चन साहब के एक तरफ प्रधानमंत्री मोदी हैं दूसरी तरफ सोनिया गांधी हैं। चैनलों को देखिये, तकरार से ऐसी ऊर्जा पैदा हुई है कि एंकरों की देहभाषा बदल गई है। अमिताभ बच्चन का यह मसला भारत माता का नया संस्करण है। अब वे राष्ट्रवाद की जगह लेने जा रहे हैं।

आप जानते हैं कि इस शनिवार इंडिया गेट के पास मोदी सरकार के दो साल पूरे होने पर एक जलसा हो रहा है। पांच घंटे तक चलने वाले इस कार्यक्रम में सरकार की नीतियों की उपलब्धी और उससे प्रभावित लोगों की कहानी का प्रदर्शन होगा। शाम पांच से दस बजे के बीच के इस कार्यक्रम के औचित्य को लेकर कहीं बहस की ज़रूरत नहीं समझी गई। देश की तीस करोड़ जनता सूखे से प्रभावित है और महाराष्ट्र में किसानों की आत्महत्या की ख़बरें आ ही रही हैं, ऐसे में पांच घंटे के सरकारी कार्यक्रम को लेकर सवाल नहीं बनते हैं, ऐसा तो हो नहीं सकता। क्या किसी सरकार के पास वाकई इतना वक्त है कि वो पांच घंटे का कार्यक्रम करे। हफ्ते भर से तमाम मंत्री चैनलों अखबारों को इंटरव्यू दे रहे हैं। अपने अपने ट्वीटर हैंडल से तमाम आंकड़े पेश कर रहे हैं। तमाम अख़बारों में सरकार के काम का गहन विश्लेषण हो रहा है। कौन सी ऐसी बात है जो इतने सारे लेख और इंटरव्यू से नहीं पहुंची जो पांच घंटे के कार्यक्रम दिल्ली से लेकर अनेक राजधानियों में अलग अलग करने की ज़रूरत पड़ी है। जहां प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री तक अपना कीमती वक्त देंगे।

क्या कोई चैनल इस पर भी बहस करेगा कि भारत सरकार के पास पांच घंटे के कार्यक्रम के लिए वक्त कहां से आया। किसकी कीमत पर हो रहा है ये सब और इसकी लागत क्या है। क्या इस पैसे को किसानों में बंटवा कर हम सरकार के लिए ताली नहीं बजा सकते थे। कहीं हम पर्दा तो नहीं डाल रहे हैं। अरे हां पर्दे पर महानायक जो आ गया है। जुम्मा चुम्मा दे दे....जुम्मा चुम्मा दे दे जुम्मा....जुम्मे के दिन किया चुम्मे का वादा...ले आ गया रे फिर जुम्मा जुम्मा....मैं भी यही सुनूंगा। आप भी बच्चन साहब को देखिये। उनका अपमान नहीं सहेगा हिन्दुस्तान।

- रवीश कुमार

....अब अगला नंबर भूपेंद्र सिंह हुड्डा का

-वाई. के. रज्जन

हरियाणा की यह विडंबना रही है कि अभी तक जो मुख्यमंत्री उसे नसीब हुए हैं, वे राज्य को विकास के किसी ठोस मुकाम पर पहुंचाने की बजाय किसी न किसी मोह में पड़कर इस बेहतरीन प्रदेश की लुटिया डुबो दी। बंसीलाल एक अपवाद थे, जिन्होंने वाकई गांवों व शहरों के लिए कुछ किया, जिनका उपभोग लोग अब तक कर रहे हैं। लेकिन बाद में वो भी पुत्र मोह में पड़े और अच्छी खासी बदनामी मोल ली। भजनलाल करप्शन का दूसरा नाम शाबित हुए। देवीलाल पुत्र मोह में ऐसा पड़े कि अपना समाजवादी मिशन तक भूल गए। बी.डी. गुप्ता ने अपनी बिरादरी के लिए काफी कुछ किया लेकिन हरियाणा को कुछ हासिल नहीं हुआ। चौटाला के बिना यह कथा अधूरी रहेगी। चौटाला ने भी करप्शन की सारी सीमाएं तोड़ दीं और अब जेल की रोटियां खा रहे हैं।...और बाकी सीएम तो बस नाम के लिए हुए...लेकिन अभी हम बात कर रहे हैं भूपेंद्र सिंह हुड्डा की। जिसने लगातार 10 साल तक गांधी परिवार को खुश करते हुए हरियाणा पर शासन किया। मौजूदा सीएम मनोहर लाल का अपना परिवार नहीं है तो वो संघ परिवार को खुश करने में लगे हुए हैं। ...लेकिन अभी बात सिर्फ हुड्डा की।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा अब जेल जाते नजर आ रहे हैं। दामाद जी पर उनकी जो कृपा रही वो तो खैर उनकी राजनीतिक मजबूरी थी लेकिन अपने रिश्तेदारों और खानदान वालों को जिस तरह उन्होंने उपकृत किया, उसने उन्हें जेल के सामने खड़ा कर दिया है। हुड्डा के खिलाफ पंचकूला में इंडस्ट्रियल प्लॉट अपनों को देने के नाम पर एफआईआर तो पिछले साल हुई थी लेकिन सीबीआई ने राजनीतिक कारणों से हुड्डा के खिलाफ अब जाकर कार्रवाई तेज की है। हम यह नहीं कह सकते कि मौजूदा सरकार की यह बदले की कार्रवाई है। मजदूर मोर्चा समय-समय पर हुड्डा के कार्यकाल में हो रहे घोटालों को लेकर जनता को और कांग्रेस आला कमान को सचेत करता रहा है। लेकिन कांग्रेसी भांग पीकर पड़े रहे। हम अब इस आधार पर हुड्डा को क्लीन चिट नहीं दे सकते कि अब बीजेपी सरकार राजनीतिक बदला ले रही है। घोटाला तो हुआ ही था।

क्या है मामला

पंचकुला में 496 से 1280 वर्ग गज के 14 प्लॉट या तो हुड्डा के रिश्तेदारों को मिले या फिर उनके दोस्तों को। जाहिर है ऐसे में आला अफसर भी अपना हाथ सेंकने से बाज नहीं आते। उन्हीं कुछ अफसरों में शामिल हैं तत्कालीन हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (हुडा) के मुख्य प्रशासक डी.पी.एस नांगल, तत्कालीन चीफ फाइनैंस अफसर एस.पी. कंसल और हुडा के तत्कालीन डिप्टी सुपरिटेंडेंट बी.बी. तनेजा।

जुलाई 2013 में ये सारा घोटाला हुआ। हुड्डा साहब उस वक्त सीएम थे तो हुडा के चेयरमैन भी वही थे। हुडा की एक स्टैंडिंग कमिटी की बैठक हुई,जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन सीएम ने की। इसी बैठक में प्लॉट देने का फैसला हुआ। लेकिन कमिटी ने अपने परिवार की एक विधवा, अपने सचिव के बेटे, अपने ओएसडी की बहू, अपने एक बहुत नजदीकी मित्र, तत्कालीन दो कांग्रेस विधायक और हाई कोर्ट के एक जज की बहू को भी देने का फैसला किया। बाकी प्लॉट हुडा के आला अफसरों ने बेच खाए या अपनों को दे दिया। इस मामले की जांच दो लेवल पर हुई। राज्य के विजिलेंस ब्यूरो ने इसकी गहन पड़ताल की और पाया कि मामले में दम है और हुड्डा साहब को सीधे लपेटा जा सकता है। ब्यूरो की दमदार रिपोर्ट देखने के बाद ही सीएम मनोहर लाल खट्टर ने इस मामले की जांच सीबीआई से कराने की सिफारिश की। सीबीआई ने अभी सिर्फ एफआईआर दर्ज की है और राज्य में कुछ जगहों पर 16 बार छापे मारे हैं। इन छापों में उसे क्या मिला, ये नहीं बताया गया है। सीबीआई जांच जारी है।

दरअसल, बीजेपी एक तीर से कई शिकार करना चाहती है। सीबीआई जांच कराकर इस मामले को वो लंबा खींचना चाहती है ताकि ज्यादा से ज्यादा हुड्डा, कांग्रेस पार्टी और गांधी परिवार की फजीहत की जा सके। तब तक अगला चुनाव आ जाएगा और मामला जिंदा रहेगा। अगले तीन साल तक भी मामला अदालतों में चला और आरोप साबित हुए तो चुनाव आते-आते हुड्डा के जेल जाने के हालात होंगे। यानी मौजूदा सरकार ने पूरा ताना-बाना करप्शन के इस ठोस मामले से फायदा उठाने के लिए बुना है। सबूत इतने हैं कि हुड्डा साहब फंसते नजर आ रहे हैं।

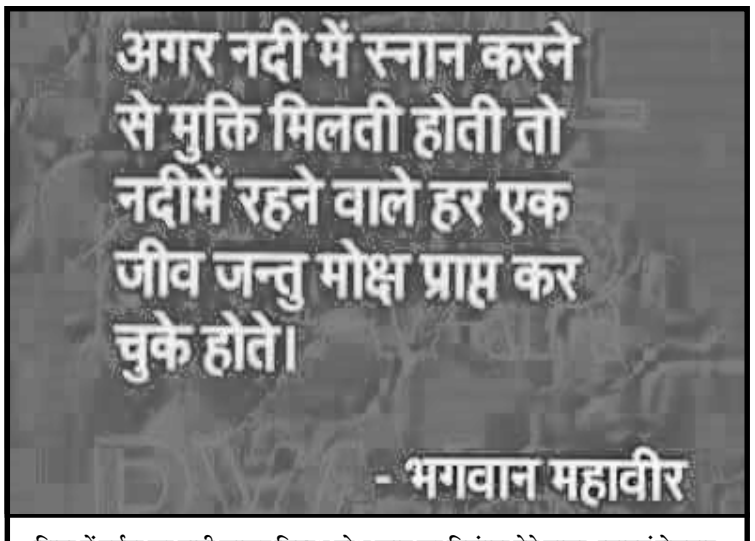

शिप्रा में नर्मदा का पानी लाकर सिहस्थ मोक्ष स्नान का निमंत्रण देने वाला, व्यापमं रोजगार घोटालेबाज शिवराज सिंह चौहान (मुख्य मंत्री, मध्य प्रदेश) जनता की आँख में सरासर धूल झोंकता रहा और सिहस्थ धर्म के नाम पर सैकड़ों करोड़ डकार गया !

साइंस की पढ़ाई

कुछ साल पहले अपने एक पाकिस्तानी मित्र से मैंने पुछा था कि भाई आपके मदरसों में साइंस कैसे पढ़ाई जाती है? उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि टीचर जब स्टूडेंट्स से पूछता है कि तीन हिस्से पोटेशियम परमैंगनेट में दो हिस्से सल्फ्यूरिक एसिड मिलाएंगे तो क्या होगा?

स्टूडेंट जवाब देते हैं- वही होगा जो मंजूर-ए-खुदा होगा।

इस एक ब्रह्मास्त्र से वे केमिस्ट्री, फिजिक्स, बायोलॉजी, मैथ्स इत्यादि का कोई भी प्रश्न तुरन्त हल कर लेते हैं।

उस समय मुझे बड़ी निराशा हुई थी कि ऐसा कोई उदाहरण भारत में हमारे पास नहीं है। लेकिन मित्रो..... अब वैदिक शिक्षा के प्रचार का बड़ा इंतेजाम हो रहा है। अब हमारे बटुक और ब्रह्मचारी भी पाकिस्तान की ईंट से ईंट बजाने के लिए तैयार हो रहे हैं।

सोचिये निकट भविष्य में यही प्रश्न आचार्य जी अपने ब्रह्मचारियों से पूछ रहे हैं- अहो ब्रह्मचारियों! पोटेशियम और सोडियम मिश्रित करने पर आपने क्या देखा?

उत्तर देते हुए सारे ब्रह्मचारी एकसाथ चिल्लाते हैं

दिखा वही जो राम रचि राखा

को करी तरक बढ़ावहि साखा

आचार्य जी आँखों में खुशी के आंसू लिए सभी ब्रह्मचारियों को एंटायर केमिस्ट्री में एम. ए. की डिग्री थमा देते है। फिर इनमे से कुछ अधिक मेधावी ब्रह्मचारी बी.ए. की तैयारी में जुट जाते हैं।

विज्ञापन से इतिहास निर्माण

यक्ष - केरल में सत्ता मिलते ही कामरेड विजयन ने फुल पेज के विज्ञापन दिए है। क्या कम्युनिस्ट पार्टी को ये शोभा देता है ?

युधिष्ठिर - पहले नही देता था अब देने लगा है। क्योंकि , आजकल जिसे देखो वही इतिहास बना रहा है तो इन्होंने सोचा कि एक इतिहास हम लोग भी बना लें । वैसे भी ये इस इलजाम से आजिज आ चुके थे कि उन्हें सिर्फ इतिहास तोड़ना मरोड़ना आता है , बनाना नही , तो मौका मिलते ही वो भी कर के दिखा दिया ।

यक्ष - लेकिन इतिहास रचने के कई एक और भर तरीके हो सकते थे । विज्ञापन वाला आइडिया इन्हें कैसे आया ?

युधिष्ठिर - क्योंकि आजकल विज्ञापन के जरिये ही इतिहास बनाने का फैशन है । वैसे बता दूँ कि , विजयन पूरे चुनाव भर एक ही गाना गाते रहे क्या हुआ तेरा वादा / वो कसम वो इरादा सत्ता मिलते ही उन्होंने सोचा कि क्यों न पब्लिक के सामने ये राज खोल दिया जाए कि हम किसी से कम नही।

- पंकज मिश्र

ऊंची जातियों का आरक्षण

आरक्षण विरोधी आंदोलन के नेता जिन्हे शर्माजी कहें, अपनी मान्यता के बारे मे काफी आश्वस्त थे। कहने लगे = कैसा अन्याय है! कम नंबर हों तो भी हरिजन लड़के लड़की को मेडिकल और इंजीनियर कालेज मे भरती कर लिया जाता है। नौकरी मे जगहें सुरक्षित हैं। फिर प्रमोशन की दस पोस्ट हों तो तीन उन्हें मिल जाती है। हम पढ़े लिखे योग्य लोग क्या इसलिए वंचित हों कि हमने ऊंची जाति मे जन्म लिया है?

मैं समझ गया, हजारों साल पहले ऊंची जातियों ने यह मान लिया था जो कुछ भी समाज मे उपलब्ध है, हमारा है। वंचित रहना नीची जातियो का धर्म है। मान, प्रतिष्ठा धन- सब ऊंची जातियों का अधिकार है।

स्कूल में मेरे साथ नाई का लड़का पढ़ता था। वह मुझसे ज्यादा होशियार था। मुझे गणित पढ़ाता था और नकल भी कराता था। वह आता तो कहता, हरिशंकर, नमस्ते। मेरे चाचा ने डांटा तू नाई होकर नमस्ते करता है। पांव लागी किया कर। उन्हे क्या पता कि उन जैसे श्रेष्ठ ब्राह्मण के भतीजे को वह नाई पढ़ाता और नकल कराता था ।